**Knowledgeable Research** (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
**Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.07, July,2025**

# वैदिक साहित्य के अंतर्गत वर्णित संगीत चिकित्सा की समकालीन उपयोगिता

***गज़ाला**
**शोधच्छात्रा**
**संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग**
**लखनऊ विश्वविद्यालय**

**********

***शोधसार:*** *"मंत्र का अर्थ है **'मननात् त्रायते इति मंत्र:'** अर्थात् जिसके उदात्त, अनुदात्त और स्वरित जैसे स्वरों के साथ विधि पूर्वक उच्चारण करने से हमारा मन **'शब्दब्रह्म'** से संपर्क में शीघ्र आ सकता है अभिप्राय है कि स्वर या संगीतमय प्रार्थना, न केवल मंत्रों को सुगठित करती है अपितु स्वरों के उच्चारण हमारे शरीर के विभिन्न अवयवों को रचनाशील (creative) बनाते हैं"[i] आज के विद्वान भी मंत्र शक्ति को मानते हैं। शब्द शक्ति इलैक्ट्रोनिक मैग्नेटिक लहरें (Electronic magnetic waves) उत्पन्न करती हैं। जो स्नायु तंत्र पर वाञ्छित प्रभाव डालकर उनकी सक्रियता बढाती है। मंत्रों का पुनरोच्चारण या जाप के प्रभाव संबंधी विभिन्न प्रयोग तथा सामैटिक्स के अंतर्गत भी यह अध्ययन जारी है जो यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि मंत्रों का सांगीतिक उच्चारण एवं उसका जाप शरीर, मनस् और प्रकृति पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। भारतीय ज्ञान -विज्ञान का आधार ग्रन्थ **"वेद"** है। वेदों में समस्त कलाओं तथा विद्याओं का समावेश होने के कारण ही वेदों को अपौरुषेय कहा जाता है। वेदोत्पत्ति सम्बन्धी मन्त्र ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में समान रूप से प्राप्त होते हैं-*

***तस्मात् यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।***
***छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।***[ii]

*अर्थात् उस श्रेष्ठ परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और छन्दांसि अर्थात् अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं।*

***शब्दबिन्दु:-*** *मंत्र का अर्थ, मननात् त्रायते इति मंत्रः, स्वर — उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, शब्दब्रह्म से संपर्क, संगीतमय प्रार्थना, स्वर का प्रभाव, शारीरिक रचनात्मकता, मंत्र शक्ति, शब्द शक्ति, इलेक्ट्रॉनिक मैग्नेटिक तरंगें*

**********

## सामवेद संहिता:-

ऋचा और ज्ञान के समन्वय को साम कहते है इसे अलंकारो का प्रयोग करके स्पष्ट किया गया है।

**या ऋक तत् साम**[iii]**'**

अर्थात् गीत को ही साम कहते है। **सा** -> ऋचा। **अम्** ⟶ गान यह सामन् की कृत्रिम व्युत्पत्ति है। ऋचाओं का गान सामन् का स्वरूप और उद्देश्य दोनों था। उद्गाता ऋचाओं का शास्त्रीय तथा परम्परागत गान करता है,गान प्रधान वेद होने से सामवेदीय मंत्रों के' **गान**" पर पर्याप्त साहित्य की रचना हुई तथा सिद्धान्त से अधिक व्यवहार का इस दृष्टि से महत्व है। सामवेद का उपवेद गान्धर्ववेद है। सामवेद गीतिमय संगीत का वेद है। संगीत संसार की सर्वश्रेष्ठ विद्या है। सामवेद के मंत्र में इस बात की पुष्टि होती है -

**गाये सहस्त्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत्।**[iv]

मंत्र में सहस्त्रवर्तनी शब्द का प्रयोग करते हुए कहा गया है कि मैं गायत्री, त्रिष्टुप, जगती छन्द वाले मंत्रों को सहस्र प्रकार से गाता हूँ। शबरस्वामी ने अपने भाष्य में कहा है-

**सामवेदे"सन्ति सहस्त्रं गीत्युपाया:**[v]**"**

सामवेद में सहस्र प्रकार की गान विधियां हैं **श्री सत्यावृत सामश्रमी** और **श्री सातवलेकर** आदि ने भी इसी मंतव्य को उपयुक्त बताया हैं।

सामवेदीय स्वरों का विकास:-

नारदीय शिक्षा में स्वरों के विकास का संकेत प्राप्त होता है नारदीय शिक्षा में तीन प्रकार के स्वरों का उल्लेख है- **१. आर्चिक २. गाथिक ३.सामिक**।

१.सर्वप्रथम आर्चिक संगीत का विकास हुआ यह एक स्वर वाला था।

२.यह गाथाओं पर आश्रित था इसलिए गाथिक कहलाता था।

३.इसके बाद सामिक संगीत आया यह तीन स्वरों वाला था इसका आधार सामवेदीय मंत्र थे। इस प्रकार साम स्वरों के विकास के तीन सोपान नारदीय शिक्षा प्राप्त होते हैं -

**आर्चिकं गाथिकं चैवसामिकं च स्वरान्तरम्।**
**कृतान्ते स्वरशास्त्राणांप्रयोक्तव्यं विशेषत:।।**

**एकान्तरः स्वरो ह्ययुक्षु गाथासु द्वयन्तरः स्वरः ।**
**सामसु त्रयन्तरं विध्याद् एतावत् स्वरतोऽन्तरं ।।**[vi]

**जैमिनी ने अपने पुत्र सुमन्तु को** – **सुमन्तु** ने सुन्वान को, **सुन्वान** ने अपने पुत्र **सुकर्मा** को **सामवेद** की शिक्षा दी। **हिरण्यनाभ का शिष्य कृत था ,**कृत ने सामवेद **के २४ प्रकार के गान स्वरों का प्रवर्तन किया**।

सामवेद के क्रमशः मध्यम्, गान्धार ऋषभ आदि - **म- ग-रे- सा-नि-ध-प - के क्रम से रहते हैं, तद्नुसार गान होता है**। भारतवर्ष का समस्त **संगीतशास्त्र 'सामवेद' को ही संगीत का मूलाधार** मानता है।

**पं शारंङ्गदेव ने भी 'सङ्गीतरत्नाकर'** में इस बात को स्पष्ट किया है-

**सामवेदादिदं गीतं संजग्राह पितामहः**[vii]

अर्थात् ब्रह्मा ने सामवेद के द्वारा ही गीत का संग्रह किया है।

सामगान में **'स्वर'** मुख्य आधार था। सामगान में तीन स्वरों का उपयोग होता था, तथा इन्हीं तीन स्वरों के द्वारा गान होता था। स्वर तीन प्रकार के कहे गये हैं – **उदात्त- अनुदात्त- स्वरित**।

**सङ्गीत रत्नाकर के अनुसार संगीत की परिभाषा:-**

**"गीत वाद्यं तथा नृत्यं त्रयो संगीत मुच्यते"।**[viii]

अर्थात संगीत एक ऐसी अन्विति है,जिसमे गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों का समावेश है। संगीत शब्द में व्यक्तिगत तथा समूहगत दोनों विधियों की अभिव्यंजना स्पष्ट है। इसी कारण व्यक्तिगत गीत,वादन,तथा नर्तन के साथ समूहगान, समूह वादन तथा समूह नर्तन का समावेश इसके अंतर्गत होता है।

वेदों के काल निर्धारण के संबंध में विभिन्न मतानुसार यह तो सिद्ध ही है कि संगीत द्वारा चिकित्सा का प्राचीनतम उल्लेख जिन भारतीय ग्रंथों में मिलता है वे निश्चित वेद ही हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद मानव इतिहास की सबसे प्राचीन रचनाएँ हैं जो निर्माण की सतत क्रमिक प्रक्रिया में से होकर अंततः लिपिबद्ध की गई। "ऋग्वेद की एकमात्र शाकल शाखा मिलती हैं, शुक्ल यजुर्वेद की काण्व और माध्यन्दिन यह दो शाखाएं उपलब्ध है। सामवेद की कौथुम और राणायनीय यह दो शाखाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। अथर्ववेद की पिप्पलाद और शौनक शाखाएँ प्राप्य हैं।[ix] ध्वनि के भारतीय वेद चतुष्टयी के प्रथम स्तम्भ ऋग्वेद में सङ्गीत या ध्वनि के चिकित्सकीय उल्लेख सम्बन्धी उद्धरण पर्याप्त मात्रा में पाये गए हैं। स्तोत्र के स्वरयुक्त पाठ के द्वारा निरोग प्राप्ति सहित अन्य चमत्कारिक परिणामों को भी प्राप्त किया जाता था,भारतीय ऋषि प्राचीन काल के वैज्ञानिक ही थे जिन्होंने भौतिक घटनाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण कर पराविधाओं का सृजन किया।

**ऋग्वेद :-**

ऋग्वेद सब वेदों में बड़ा एवं प्राचीन है। वेद तत्कालीन समाज एवं बौद्धिक स्तर का प्रतिबिम्ब है। "यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह किसी वस्तु को अपने जैसे स्वरूप में ही रखकर वर्णन करना चाहता है।

पुष्प, सुगंधित वायु एवं लेप, वस्त्र आदि मानव को पसंद होता है तो वह यह ईश्वर को अर्पित कर यह मानता है कि ईश्वर को भी यह प्रिय है। सङ्गीत (वादन, गायन एवं नृत्य) मनुष्य को प्रिय है अतः प्रभु को भी वह यह अर्पित करता है। वेदों, सूक्तों के प्रभाव एवं सङ्गीत चिकित्सा के इस प्रारंभिक स्वरूप संबंधी उद्धरण सभी वेदों में प्राप्त हैं। ऋग्वेद संहिता में विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से विभिन्न देवताओं से आयु, विद्या, यश एवं बल की कामना की जाती है। इन्द्र, वरुण, मरुत्, अग्नि आदि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए सस्वर मंत्र पाठ का विधान था। प्रथम मंडल के सूक्त 33 में मंत्र शक्ति से शत्रु पर विजय प्राप्त करना सम्भव बताया है।

**परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम् ।**
**अमन्यमानौं अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरथमो दस्युमिन्द्र ।।९।।**

(सूक्त-३३)

हे इन्द्रदेव। आपने अपनी सामर्थ्य से द्युलोक और भूलोक का चारों ओर से उपयोग किया। तथा अनुचरों द्वारा विरोधियों पर विजय प्राप्त की। आपने मन-शक्ति से ज्ञानपूर्वक किये गये प्रयासों से शत्रु पर विजय प्राप्त की।

**यजुर्वेदः-**

यजुर्वेद याज्ञिक विधान संबंधी वेद है। अनेक प्रकार के यज्ञ अनेक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संपन्न कराये जाते थे। मंत्रों का सस्वर उच्चारण ही उनके प्रभाव को सुनिश्चित करता था। इस कारण उसे लिखते समय तीन स्वरों के चिन्ह लगाये जाते थे। यज्ञ की सफलता से सर्वसुख एवं स्वास्थ्य की ही कामना की जाती थी। कुछ श्लोकों में स्पष्ट उल्लेख है कि उक्त सूक्त द्वारा शारीरिक व्याधियों से मुक्ति मिल सकती है। नवम् अध्याय के २१वें श्लोक में यज्ञ द्वारा आयु वृद्धि का उल्लेख है। यज्ञ से अन्य लाभ भी इस मंत्र में वर्णित हैं।

**आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतां।**
**नक्षंर्यज्ञेनं कल्पता श्रोत्रं यज्ञेनं कल्पतां पृष्ठं।**
**यज्ञेन कल्पतां यज्ञो भज्ञेनं कल्पताम्।**
**प्रजायतेः प्रजाऽअंभूम**
**स्वदेवाऽअगन्मामृतोऽअभूम।।'**[x]

**अथर्ववेदः -**

संहिता का प्रमुख उद्देश्य औषधि एवं मंत्रों के सहायता से स्वस्थ जीवन प्राप्ति और स्वस्थ शरीर से ईश्वर आराधना या स्तुति करना है। कुछ मंत्रों में ईश्वर से स्तुति रूप में कहा गया है कि हमें निरोग रखे या उक्त रोग से मुक्ति दें। कुछ मंत्र विशेष व्याधि से स्वतः ही मुक्ति दिलाता है ऐसा श्लोक में उल्लेख होता है।

**आप इद् वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः।**
**आपो विश्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।।**[xi]

भावार्थ - जल सम्पूर्ण रोगों का निवारक है। जल ही रोगों के (मूल) कारण का नाश करने वाला है। जल ही सबके लिए हितकारी औषधि रूप है, वह आपके निमित्त रोगनाशक हो।

**अवकोल्बा उदकात्मान ओषधयः।**
**व्यृषन्तु दुरितं तीक्ष्णशृङ्घः।।**[xii]

**भावार्थ** - जल ही जिनकी प्राण चेतना है, ऐसी शैवाल में पैदा होने वाली तीक्ष्ण गन्धयुक्त तीखें सींगों के आकार वाली जो औषधियाँ हैं, वे पापरूपी रोग को विनष्ट करें।

**सामवेदः-**

सामवेद में वर्णित श्लोक मूलतः अन्य वेदों के श्लोकों, मुख्यतः ऋग्वेद से लिये गए हैं। सामवेद का गायन सोमवल्लि से सोम रस प्राप्ति और उसके छानने, दूध मिलाने एवं देवताओं को अर्पित करते समय किया जाता था। सामवेद में ओंकार को सर्वश्रेष्ठ मंत्र एवं ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ नाम कहा है। "ध्वनि आकाश का गुण है। यह ध्वनि ओऽम् ही है। जिसका रस, प्रारम्भिक वाक् में देव नहीं प्राप्त कर सके।" ओमकार का अ उम क्रमशः पृथ्वी, अन्तरिक्ष, भूः भुवः स्वः का प्रतीक है। सभी मंत्रों और उनमें निहित शक्तियों का आधार 'ओम्' है। साम और संगीत आज समान अर्थों में प्रयुक्त होते हैं और सामवेद में भी स्वर और सङ्गीत के महत्त्व को जानते हुए प्रयुक्त किया गया है।

**"पाव मानिर्या अध्येत्यनिभिः संभतूरसम्।**
**तस्मै सरस्वती दुहे क्षीर सर्विर्मधूदकम् ।।**[xiii]

**भावार्थः-** जो ऋषियों द्वारा एकत्र किए गए सार रूपी शुद्ध करने वाले मंत्रों का अध्ययन करता है, उसे विद्यादेवी दूध, घी, शहद और पानी देती हैं। अर्थात् सुख समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। (ऋ.9/67/32 एवं सामवेद 10/7/2) वेदचतुष्टयी में मंत्रों के प्रभाव एवं प्रयोग से चिकित्सकीय लक्ष्यों की प्राप्ति का उल्लेख मिलता है।

**आयुर्वेद एवं सङ्गीत चिकित्सा :-**

आयुर्वेद का आधार मानव शरीर के त्रिदोष के संतुलन को बनाये रखना है। "वात, पित्त एवं कफ क्रमशः वायु, अग्नि एवं जल का शरीर में विभिन्न रूपों में प्रतिनिधित्त्व करते हैं।"वायु शक्ति के रूप में रस आंशिक रूप से शारीरिक एवं मानसिक तत्त्व है जो शरीर एवं मस्तिष्क के मध्य महत्त्वपूर्ण संबंध है जो विचारों एवं भावनाओं पर प्रभाव डालते है।" सङ्गीत एवं रस का संबंध तो भरत काल से ही प्रमाणित है अतः आयुर्वेद भी संगीत से प्राप्त रस को स्वास्थ्य संतुलन हेतु महत्वपूर्ण मानता है। "सुमधुर सङ्गीत (गायन अथवा वादन) पित्त के संतुलन में सहायक है। अचेतना के समय भी साङीतिक ध्वनियों का प्रयोग निर्देशित है।" दोष संतुलन हेतु सङ्गीत का उल्लेख विभिन्न विद्वान् करते हैं।" श्रृङ्गारिक रागों या रचनाओं से कफ दोष जन्य निराशा एवं घृणा को दूर किया जा सकता है। शांत रस युक्त सङ्गीत पित्त जनित क्रोध को शांत कर देता है। वीर रस से परिपूर्ण रचना वात दोष को दूर कर सकती है।"

(सारिणी क. 5- दोषों द्वारा संभावित रोग

| दोष | संतुलन | असंतुलन | संभावित रोग |
|---|---|---|---|
| वात | शांति | भय एवं चिंता | तंत्रिका संबंधी रोग, गठिया,नितम्भ संबंधी दर्द, अनिद्रा, त्वचा रोग, कब्ज, मसूड़ों में दर्द, हड्डियों की कमजोरी, बांझपन, नामर्दी, कानों में सुन्नपन, पक्षाघात, रक्त के थक्के जमना भूख न लगना, कंपन के साथ मूर्छा, रक्त प्रवाह में असंतुलन |
| पित्त | सुन्दरता | रोष एवं क्रोध | चिंता तनाव संबंधी रोग, उच्च रक्त चाप, हृदय |
| | चमक | | वहनियों में रुकावट, अल्सर, पेट एवं आतों का कैंसर, संक्रमण, हेपेटाईटिस, मूत्राशय में संक्रमण, प्लीहा में संक्रमण। |
| कफ | शक्ति उत्साह | दु:ख निराशा घृणा | सर्दी,खासी, मितली, फेफडों में संक्रमण, श्वास रोग, किडनी स्टोन, गाठें, ट्यूमर, घंघा, छाती का कैंसर, कवक संक्रमण, पाचन दोष, मोटापा। |

रस का संबंध शरीर के विभिन्न स्त्राव ग्रंथियों से होने वाले रसों के बहाव से भी है जो शरीर की रसायनिक गतिविधियों का आधार है। मस्तिष्क के संदेशों अथवा विभिन्न अनुभूतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप इन ग्रंथियों से रसायन रक्त आदि में फैलने लगते हैं जो हमारे शरीर की कार्यविधि एवं हमारे व्यवहार आदि को प्रभावित करते हैं। आयुर्वेद में पित्त का संतुलन इन्हीं रसायनों के संतुलन से संबंधित है जो सङ्गीत के श्रवण एवं उसमें सहभागिता से भी प्रभावित होता है।

**मध्यकालीन साहित्य में सङ्गीत चिकित्सा:-**

विभिन्न आवृत्तियों के नाद-अनुनाद शरीर की सभी कोशिकाओं पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालते हैं तथा संतुलन बिगड़ने पर उसे पुनः संतुलित करने में सहायक होते हैं। यह मन और पूरे शरीर को प्रभावित करता है। स्वरों का प्रभाव मन और शरीर के पारस्परिक संतुलन पर पड़ता है।

आचार्य शारङ्गदेव ने अपने ग्रंथ सङ्गीत रत्नाकर में सङ्गीत के चिकित्सकीय परिणामों का उल्लेख अनेक रूपों में किया है। रत्नाकर के स्वराध्याय में स्वरों की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए विभिन्न स्वरों से सम्बन्धित स्नायुओं चक्रों और शारीरिक अंगों का वर्णन विस्तारपूर्वक किया है। संगीत रत्नाकर के प्रथम भाग में स्वर (ध्वनि रूप) में उत्पत्ति के बारे में कहा गया है कि किस प्रकार नाड़ियों से टकराकर ध्वनियाँ / श्रुतियाँ निकलती हैं ये श्रुतियाँ नाड़ियों को प्रभावित करती है और यही जीवन का आधार भी है।

**ब्रह्माग्रन्थिजमारूतानुगतिना चित्सेन हृत्य जेक सूरीणा मनुरज्जकः श्रुतिपदंयो यं स्वयं राजते यस्माद् ग्राम विभाग वर्ण रचना डलका रजाति कमो वन्दे नादतनुं तमुद्धरजगदीतं मुदे शंकरम् ।।**[xiv]

यह ओजस् भी तंत्रिकीय कार्य प्रणाली का ही दूसरा रूप है। भैषज-तन्त्र के रचयिता, अश्विनी कुमार ने प्रत्येक रोग के उपचार के लिए चार भेषजों - **"पवनौकस्"**, **"जलौकस्"**, **"वनौकस्"**, और **"शाब्दिक"** का वर्णन किया गया है। मैंद ऋषि ने "**शब्द कौतूहल**" नामक ग्रन्थ की रचना की, उसके प्रथम प्रकरण में रोगनिदान,शाब्दिक औषधि,वीणा,विपंची पणव शंख भेरी मृदंग, मंजीरा, वंशी, आदि वाद्य भेषज से ही बजाने और उनको सुनकर राग निदान की व्याख्या की गई है।

**निष्कर्ष :-**

संगीत चिकित्सा द्वारा उपचार आज के सन्दर्भ में एक बड़ी उपलब्धि है। अन्य चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ ये भी समाज की आवश्यकता बनती जा रही है। क्योंकि आज हम जिस सामाजिक परिवेश में रह रहे हैं, वहां विभिन्न प्रकार के तनाव, अवसाद से व्यक्ति घिरा हुआ है, जिसके कारण शारीरिक एवं मानसिक रोगियों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अतः अन्य चिकित्साओं को साथ-साथ सङ्गीत चिकित्सा का प्रावधान वर्तमान में निजी एवं सरकारी दोनों स्तर पर किया जा रहा है। बड़े-बड़े चिकित्सालयों में, संस्थानों में सङ्गीत चिकित्सकों की

विधिवत् नियुक्तियां भी की गई हैं, जो सङ्गीत, चिकित्सा एवं रोगियों सभी के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
संगीत चिकित्सा को लोगों ने सहर्ष अपनाया तो है, इससे सम्बन्धित शोध एवं अनुसंधान भी किए जा रहे हैं। परन्तु इसे व्यवसाय के रूप में अपनाने वालों की संख्या अभी बहुत अल्प है। परन्तु अब वह समय आ गया है जब इसे पेशे के रूप में अपनाने में कोई व्यवधान नहीं बल्कि हम अपनी रूचि ज्ञान, धनार्जन की अपार संभावनाओं के साथ-साथ सामाजिक सेवा का भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं। प्राचीन भारत में सङ्गीत के द्वारा रोगों की चिकित्सा होती रही होगी, इन ग्रंथों के द्वारा हमें एक स्थूल आधार मिलता है। आज हम भले ही सङ्गीत द्वारा निरोग प्राप्ति पर प्रयोग कर रहे हैं, परंतु वैदिक काल में मंत्रों/स्तोत्रों से निरोग से भी अधिक अमरता प्राप्त करने के दावे किये गये थे, जो आज भी रहस्य का विषय है। मानव देह की नश्वरता को अमरता की सत्यतता  तक ले जाना आज अवश्य ही अकल्पनीय जान पडता है परंतु जिस सहजता से ऋग्वेद सहित अन्य प्राचीन ग्रंथों में अमरत्व का उल्लेख किया गया है यह कदापि नहीं लगता कि वह उल्लेख पूर्णतः कल्पना ही है। तीन स्वरों का प्राचीन वैदिक सङ्गीत और उसका प्रभाव आज के बहुस्वरीय एवं बहुरूपी सङ्गीत से अधिक था, यह उसके सहज एवं प्राकृतिक होने के कारण ही है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

[i] शर्मा, डॉ. महारानी; संगीत चिकित्सा", कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, २०१४, पृ. ३१
[ii] यजुर्वेद.३१.७
[iii] छान्दोग्योपनिषद १.३.४.
[iv] सामवेद १८२९
[v] मीमांसा सूत्र शाबर भाष्य-९.२.२९
[vi] नारदीय शिक्षा ११.२-३.
[vii] पं शारंगदेव  'संगीतरत्नाकर'
[viii] संगीत रत्नाकर, श्लोक २१ , स्वरगताध्याय:
[ix] राग रागिनियों द्वारा रोग चिकिसा" मधुगंधा मधुव्रत, जनवरी १९७२
[x] शर्मा, श्रीराम; "यजुर्वेद", संस्कृति संस्थान, बरेली १९९०  पृ. १३१
[xi]  शर्मा, श्रीराम; "अथर्ववेद संहित भाग 1", जनजागरण प्रेस १९९१ , पृ.२३२
[xii] शर्मा, श्रीराम; "अथर्ववेद संहित भाग 1", जनजागरण प्रेस १९९१ ,पृ. ३२७
[xiii] सातवलेकर, श्रीपाद दामोदर; "अथर्ववेद" स्वाध्याय मंडल पारडी बलसाड १९६३  पृ.१९७
[xiv] "राग रागिनियों द्वारा रोग चिकिसा" मधुगंधा मधुव्रत, जनवरी १९७२

*Corresponding Author: Gazala
E-mail: gazalagazala70@gmail.com
Received: 02 June,2025; Accepted: 27July 2025. Available online: 30 July, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License